

Varad Seeds And Agritech

Shop No.91, Block No.4, New Seeds Market, New Mondha, JALNA- 431203. | Ph.: (02482) 229684, 09764350436 | E: varad.agrotech@gmail.com

Details (English) Agronomical Practices for F1 Muskmelon		विभाग		तपशील (इंग्रजी) एफ१ कस्तुरीसाठी कृषी पद्धती		विभाग	
2. Agro-Climatic Requirements	Temperature: 20-32°C. Soil Type: Well drained Sandy loam preferred pH: 6.0-7.0 Seasons: South India: September - Feb North India: December-January (riverbeds), February (plains)	२. कृष्णी-हवामान आवश्यकताए तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सप्टेंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: डिसेंबर-जानेवारी (नदीती), फेब्रुवारी (सपाट प्रदेश)	२. कृष्ण-जलवायु आवश्यकताए तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सितंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: दिसंबर-जानेवारी (नदित्वा), फब्रुवारी (समतल भूमि)	२. मृदुल-साठ्या-लाकडांयत अवर्षण तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सितंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: दिसंबर-जानेवारी (नदित्वा), फब्रुवारी (समतल भूमि)	२. मृदुल-साठ्या-लाकडांयत अवर्षण तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सितंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: दिसंबर-जानेवारी (नदित्वा), फब्रुवारी (समतल भूमि)	२. मृदुल-साठ्या-लाकडांयत अवर्षण तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सितंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: दिसंबर-जानेवारी (नदित्वा), फब्रुवारी (समतल भूमि)	२. मृदुल-साठ्या-लाकडांयत अवर्षण तापमान: २०-३२°C मातीचा प्रकार: चांगला निचरा होणारा वालुकामय विकसामाती परकीय साहचर्या: ६.०-७.० ऋतू: दक्षिण भारत: सितंबर - फेब्रुवारी उत्तर भारत: दिसंबर-जानेवारी (नदित्वा), फब्रुवारी (समतल भूमि)
3. Land Preparation	2 to 3 deep plough, Prepare the land to a fine tilth, prepare beds Prepare raised beds of 1.2 m width and 30 cm height for sowing. Apply FYM 12 to 15 MT/acre Direct Sowing & Transplan	३. जमीन तयारी २ ते ३ खोल नांगर टाक, जमीन चांगली मशागत करा, चांगले तयार करा. पेरणीसाठी १.२ मीटर रुंदीचे आणि ३० सेमी उंचीचे उंच बांध तयार करा. एकरी शेतावर १२ ते १५ मेट्रिक टन घाला. थेट पेरणी आणि पुनःलावणी	३. भूमि की तयारी २ से ३ गहरी जुताई कर, खेत को अच्छी तरह जित ले। बारीक तयार करा। पेरणी के लिए १.२ मीटर चौड़ी और ३० सेमी ऊंची बांध तैयार करें। प्रति एकड़ १२ से १५ मेट्रिक टन गोबर की खाद डालें। सीधी बुवाई और रोवाई	३. भूमि की तयारी २ से ३ गहरी जुताई कर, खेत को अच्छी तरह जित ले। बारीक तयार करा। पेरणी के लिए १.२ मीटर चौड़ी और ३० सेमी ऊंची बांध तैयार करें। प्रति एकड़ १२ से १५ मेट्रिक टन गोबर की खाद डालें। सीधी बुवाई और रोवाई	३. भूमि की तयारी २ से ३ गहरी जुताई कर, खेत को अच्छी तरह जित ले। बारीक तयार करा। पेरणी के लिए १.२ मीटर चौड़ी और ३० सेमी ऊंची बांध तैयार करें। प्रति एकड़ १२ से १५ मेट्रिक टन गोबर की खाद डालें। सीधी बुवाई और रोवाई	३. भूमि की तयारी २ से ३ गहरी जुताई कर, खेत को अच्छी तरह जित ले। बारीक तयार करा। पेरणी के लिए १.२ मीटर चौड़ी और ३० सेमी ऊंची बांध तैयार करें। प्रति एकड़ १२ से १५ मेट्रिक टन गोबर की खाद डालें। सीधी बुवाई और रोवाई	३. भूमि की तयारी २ से ३ गहरी जुताई कर, खेत को अच्छी तरह जित ले। बारीक तयार करा। पेरणी के लिए १.२ मीटर चौड़ी और ३० सेमी ऊंची बांध तैयार करें। प्रति एकड़ १२ से १५ मेट्रिक टन गोबर की खाद डालें। सीधी बुवाई और रोवाई
4. Seed & Sowing	Seed Rate: 300 to 400 gm (6000 to 8000 Plants)/acre Direct Sowing Dibble the single seed at each hole. Do not sow deep or on the soil Transplant Select the healthy seedling from nursery. Age of the seedling should be 12 to 15 days. Hardening should be done befor transplant to main field. Seed Bed: 5 to 6 feet X 2 to 2.5 feet * The spacing may also vary on soil fertility and season.	४. बीजणे आणि पेरणी बीज दर: ३०० ते ४०० ग्रॅम (६००० ते ८००० पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोलीत एक बीज टाका. खोलवर किंवा जमिनीवर पक नसून रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे निवडा. रोपांचे वय १२ ते १५ दिवस असावे. हार्डनिंग प्रत्येक रोपे रोवण्यापूर्वी काळजीने करावे. Seed Bed: ५ ते ६ फीट X २ ते २.५ फीट * अंतर जमिनीची सुपीकता आणि हंगामानुसार देखील बदलू शकते.	४. बीज और बुवाई बीज दर: 300 ग्र 400 ग्राम (6000 से 8000 पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोली में एक बीज डालें। गहराई किंवा जमीन पर पक न होना। रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे चुनें। रोपों का उम्र 12 से 15 दिन पुराना होना चाहिए। मुख्य रोप रोवने से पहले पौधों को कठोर बनाना चाहिए। Seed Bed: 5 से 6 फीट X 2 से 2.5 फीट * मिट्टी की उर्वरता और मौसम के आधार पर दूरी अलग-अलग हो सकती है।	४. बीज और बुवाई बीज दर: 300 ग्र 400 ग्राम (6000 से 8000 पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोली में एक बीज डालें। गहराई किंवा जमीन पर पक न होना। रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे चुनें। रोपों का उम्र 12 से 15 दिन पुराना होना चाहिए। मुख्य रोप रोवने से पहले पौधों को कठोर बनाना चाहिए। Seed Bed: 5 से 6 फीट X 2 से 2.5 फीट * मिट्टी की उर्वरता और मौसम के आधार पर दूरी अलग-अलग हो सकती है।	४. बीज और बुवाई बीज दर: 300 ग्र 400 ग्राम (6000 से 8000 पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोली में एक बीज डालें। गहराई किंवा जमीन पर पक न होना। रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे चुनें। रोपों का उम्र 12 से 15 दिन पुराना होना चाहिए। मुख्य रोप रोवने से पहले पौधों को कठोर बनाना चाहिए। Seed Bed: 5 से 6 फीट X 2 से 2.5 फीट * मिट्टी की उर्वरता और मौसम के आधार पर दूरी अलग-अलग हो सकती है।	४. बीज और बुवाई बीज दर: 300 ग्र 400 ग्राम (6000 से 8000 पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोली में एक बीज डालें। गहराई किंवा जमीन पर पक न होना। रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे चुनें। रोपों का उम्र 12 से 15 दिन पुराना होना चाहिए। मुख्य रोप रोवने से पहले पौधों को कठोर बनाना चाहिए। Seed Bed: 5 से 6 फीट X 2 से 2.5 फीट * मिट्टी की उर्वरता और मौसम के आधार पर दूरी अलग-अलग हो सकती है।	४. बीज और बुवाई बीज दर: 300 ग्र 400 ग्राम (6000 से 8000 पौधे)/एकर सीधे पेरणी: प्रत्येक खोली में एक बीज डालें। गहराई किंवा जमीन पर पक न होना। रोपण रोपावटिकेतून निरोगी रोपे चुनें। रोपों का उम्र 12 से 15 दिन पुराना होना चाहिए। मुख्य रोप रोवने से पहले पौधों को कठोर बनाना चाहिए। Seed Bed: 5 से 6 फीट X 2 से 2.5 फीट * मिट्टी की उर्वरता और मौसम के आधार पर दूरी अलग-अलग हो सकती है।
5. Nutrient Management	Basal Dose: NPK: 40:60:30 kg/ha Organic: FYM 20 t/ha, neem cake 100 kg/ha Top Dressing: Additional 40 kg N/ha at 30 days Biofertilizers: Azospirillum, Phosphobacteria, Pseudomonas * We suggest to have soil testing and follow recommendations suggested.	५. पोषक तत्वांचे व्यवस्थापन बेसल डोस: NPK: ४०:६०:३० किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: शेतावर २० टना/हेक्टर, कडुनिंबाची १०० किग्रा/हेक्टर टॉप ड्रेसिंग: ३० दिवसांनी अतिरिक्त ४० किग्रा नशेद्वारा * आम्ही माती परीक्षण करून शिफारसीचे पातळ करण्याचा सल्ला देतो.	५. पोषक तत्व प्रबंधन मूल मात्रा: एनपीके: 40:60:30 किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: गोबर २० टना/हेक्टर, नीम की खाई 100 किग्रा/हेक्टर शीर्ष ड्रेसिंग: 30 दिवस के बाद अतिरिक्त 40 किग्रा एन/हेक्टर जैविक उर्वरक: एजोस्फिरिलम, फॉस्फोबॅक्टीरिया, प्स्यूडोमोनास * हम सिफारिश करते हैं कि आप मृदा परीक्षण करें और सिफारिशों का पालन करने की सलाह दें।	५. पोषक तत्व प्रबंधन मूल मात्रा: एनपीके: 40:60:30 किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: गोबर २० टना/हेक्टर, नीम की खाई 100 किग्रा/हेक्टर शीर्ष ड्रेसिंग: 30 दिवस के बाद अतिरिक्त 40 किग्रा एन/हेक्टर जैविक उर्वरक: एजोस्फिरिलम, फॉस्फोबॅक्टीरिया, प्स्यूडोमोनास * हम सिफारिश करते हैं कि आप मृदा परीक्षण करें और सिफारिशों का पालन करने की सलाह दें।	५. पोषक तत्व प्रबंधन मूल मात्रा: एनपीके: 40:60:30 किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: गोबर २० टना/हेक्टर, नीम की खाई 100 किग्रा/हेक्टर शीर्ष ड्रेसिंग: 30 दिवस के बाद अतिरिक्त 40 किग्रा एन/हेक्टर जैविक उर्वरक: एजोस्फिरिलम, फॉस्फोबॅक्टीरिया, प्स्यूडोमोनास * हम सिफारिश करते हैं कि आप मृदा परीक्षण करें और सिफारिशों का पालन करने की सलाह दें।	५. पोषक तत्व प्रबंधन मूल मात्रा: एनपीके: 40:60:30 किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: गोबर २० टना/हेक्टर, नीम की खाई 100 किग्रा/हेक्टर शीर्ष ड्रेसिंग: 30 दिवस के बाद अतिरिक्त 40 किग्रा एन/हेक्टर जैविक उर्वरक: एजोस्फिरिलम, फॉस्फोबॅक्टीरिया, प्स्यूडोमोनास * हम सिफारिश करते हैं कि आप मृदा परीक्षण करें और सिफारिशों का पालन करने की सलाह दें।	५. पोषक तत्व प्रबंधन मूल मात्रा: एनपीके: 40:60:30 किग्रा/हेक्टर ऑर्गेनिक: गोबर २० टना/हेक्टर, नीम की खाई 100 किग्रा/हेक्टर शीर्ष ड्रेसिंग: 30 दिवस के बाद अतिरिक्त 40 किग्रा एन/हेक्टर जैविक उर्वरक: एजोस्फिरिलम, फॉस्फोबॅक्टीरिया, प्स्यूडोमोनास * हम सिफारिश करते हैं कि आप मृदा परीक्षण करें और सिफारिशों का पालन करने की सलाह दें।
6. Irrigation Management	Frequent light irrigation, especially during flowering and fruiting Avoid over-irrigation at maturity to maintain sweetness Drip irrigation recommended for water efficiency and disease control *Crop should be well irrigated during critical stages : Transplanting, Flowering and Avoid over-irrigation at maturity to maintain sweetness	६. सिंचन व्यवस्थापन वारंवार हलके पाणी देणे. विशेषतः फुले येताना आणि फळावण्याच्या वेळी गोडपणा टिकवून ठेवण्यासाठी परिपक्वतेच्या वेळी जास्त पाणी देणे टाळा पाण्याची कार्यक्षमता आणि रोग नियंत्रणासाठी टिपक सिंचनाची शिफारस केली जाते *सह्यकारणा एक्सपर्ट फोन वॉशले पाणी द्यावे। लावणी, फुले येताना आणि टाळा गोडपणा टिकवून ठेवण्यासाठी परिपक्वतेच्या वेळी जास्त पाणी देणे	६. सिंचाई प्रबंधन वारंवार हलकी सिंचाई करे. खासकरून फुल आने और फल आने के दौरान सिंचन बनाए रखने के लिए परिपक्वता के समय ज्यादा सिंचाई से बचे पाणी की दक्षता और रोग नियंत्रण के लिए ड्रिप सिंचाई की सलाह दी जाती है *सह्यकारण पराणी के दौरान फसल को अच्छी तरह से पानी दें। रोपाई, फूल आना और परिपक्वता बनाए रखने के लिए सिंचाई के समय ज्यादा सिंचाई से बचे	६. सिंचाई प्रबंधन वारंवार हलकी सिंचाई करे. खासकरून फुल आने और फल आने के दौरान सिंचन बनाए रखने के लिए परिपक्वता के समय ज्यादा सिंचाई से बचे पाणी की दक्षता और रोग नियंत्रण के लिए ड्रिप सिंचाई की सलाह दी जाती है *सह्यकारण पराणी के दौरान फसल को अच्छी तरह से पानी दें। रोपाई, फूल आना और परिपक्वता बनाए रखने के लिए सिंचाई के समय ज्यादा सिंचाई से बचे	६. सिंचाई प्रबंधन वारंवार हलकी सिंचाई करे. खासकरून फुल आने और फल आने के दौरान सिंचन बनाए रखने के लिए परिपक्वता के समय ज्यादा सिंचाई से बचे पाणी की दक्षता और रोग नियंत्रण के लिए ड्रिप सिंचाई की सलाह दी जाती है *सह्यकारण पराणी के दौरान फसल को अच्छी तरह से पानी दें। रोपाई, फूल आना और परिपक्वता बनाए रखने के लिए सिंचाई के समय ज्यादा सिंचाई से बचे	६. सिंचाई प्रबंधन वारंवार हलकी सिंचाई करे. खासकरून फुल आने और फल आने के दौरान सिंचन बनाए रखने के लिए परिपक्वता के समय ज्यादा सिंचाई से बचे पाणी की दक्षता और रोग नियंत्रण के लिए ड्रिप सिंचाई की सलाह दी जाती है *सह्यकारण पराणी के दौरान फसल को अच्छी तरह से पानी दें। रोपाई, फूल आना और परिपक्वता बनाए रखने के लिए सिंचाई के समय ज्यादा सिंचाई से बचे	६. सिंचाई प्रबंधन वारंवार हलकी सिंचाई करे. खासकरून फुल आने और फल आने के दौरान सिंचन बनाए रखने के लिए परिपक्वता के समय ज्यादा सिंचाई से बचे पाणी की दक्षता और रोग नियंत्रण के लिए ड्रिप सिंचाई की सलाह दी जाती है *सह्यकारण पराणी के दौरान फसल को अच्छी तरह से पानी दें। रोपाई, फूल आना और परिपक्वता बनाए रखने के लिए सिंचाई के समय ज्यादा सिंचाई से बचे
7. Weed Management	Regular hoeing and mulching	७. तण व्यवस्थापन नियमित कोळणणी आणि आच्छादन	७. खरपतवार प्रबंधन नियमित निग्राह और मलिन्य	७. कण प्रबंधन नियमित निग्राह और मलिन्य	७. कण प्रबंधन नियमित निग्राह और मलिन्य	७. कण प्रबंधन नियमित निग्राह और मलिन्य	७. कण प्रबंधन नियमित निग्राह और मलिन्य
8. Plant Protection	Damping off: Treat soil with T. viride I T. harzianum @ 2 kg/acre. Drench the bed with Carbendazim or Mancozeb @ 1-2gm/litre. Gummy Stem Blight: Chlorothalonil 75% WP @2 g/litre Downy Mildew - Dimethomorph @ 2gmlts of water Powdery Mildew - Dinocap @ 1-2ml /l of water. Fruit Fly : Pheromone Traps: Use Cue-lure traps @ 10 traps/acre. * The important pest and diseases are mentioned. For more information on pest and diseases, please contact nearest varad, seeds expert.	८. वनस्पती संरक्षण ऑईलर कण: मातीवर टी. विराइड आय. टी. हार्झियानम @ २ किग्रा/एकर वा प्रमाणित प्रिंट्रिया कर. ड्रिपिंग गमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ @ २ गॅम/लिट्र पायथा पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर * महत्वाचे कीट रोग आणि रोगजनक यांचे प्रतिबंधन करणे.	८. पाँध संरक्षण गोला कल्ला: मिट्टी की २ किग्रा/एकर की दर से। विरिड और कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। गुमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र की दर से सिंचाई। डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ २ गॅम/लिट्र की दर से। पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर की दर से।	८. पाँध संरक्षण गोला कल्ला: मिट्टी की २ किग्रा/एकर की दर से। विरिड और कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। गुमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र की दर से सिंचाई। डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ २ गॅम/लिट्र की दर से। पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर की दर से।	८. पाँध संरक्षण गोला कल्ला: मिट्टी की २ किग्रा/एकर की दर से। विरिड और कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। गुमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र की दर से सिंचाई। डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ २ गॅम/लिट्र की दर से। पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर की दर से।	८. पाँध संरक्षण गोला कल्ला: मिट्टी की २ किग्रा/एकर की दर से। विरिड और कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। गुमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र की दर से सिंचाई। डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ २ गॅम/लिट्र की दर से। पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर की दर से।	८. पाँध संरक्षण गोला कल्ला: मिट्टी की २ किग्रा/एकर की दर से। विरिड और कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। गुमी स्टेम ब्लिग्ट: क्लोरोथालॉनिल ७५% WP @ २ गॅम/लिट्र की दर से सिंचाई। डाऊनी मिल्ड्यू: डायमेथोमॉर्फ २ गॅम/लिट्र की दर से। पावडर मिल्ड्यू: फेरोमोन ट्राप: क्यू-ल्यूर ट्राप @ १० ट्राप/एकर की दर से।
9. Physiological Disorders	Fruit Cracking - Sudden fluctuations in soil moisture (e.g., heavy irrigation after drought) High humidity and temperature during fruit development Boron and calcium deficiency	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमतरता	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमती	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमती	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमती	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमती	९. शारीरिक विकार फल फटणे - अचानक मातीत नमीत (उदा. उष्णतांतरानंतर जास्त पाणी देणे) उच्च आर्द्रता आणि उच्च तापमान फळावण्यादरम्यान बोरॉन आणि कॅल्शियमची कमती
10. Harvesting & Storage	Harvest when fruits emit a sweet aroma and slip easily from the vine. Typically 60-80 days after sowing depending on variety	१०. काणी आणि साठवणूक जेव्हा फळात गोड सुगंध येतो आणि वेलीतून सहज विसर्जित होतो, तेव्हा काणी करा. साधारणपणे पेरणीनंतर ६०-८० दिवसांनी, जातीनुसार	१०. कांई और भंडारण जब फल में मीठी सुगंध आ जाए और फल आसानी से तब काई करें. आमतौर पर बिस्म हों सकते हैं।	१०. कांई और भंडारण जब फल में मीठी सुगंध आ जाए और फल आसानी से तब काई करें. आमतौर पर बिस्म हों सकते हैं।	१०. कांई और भंडारण जब फल में मीठी सुगंध आ जाए और फल आसानी से तब काई करें. आमतौर पर बिस्म हों सकते हैं।	१०. कांई और भंडारण जब फल में मीठी सुगंध आ जाए और फल आसानी से तब काई करें. आमतौर पर बिस्म हों सकते हैं।	१०. कांई और भंडारण जब फल में मीठी सुगंध आ जाए और फल आसानी से तब काई करें. आमतौर पर बिस्म हों सकते हैं।
11. Post-Harvest Management	Grade fruits based on size, shape, colour, and absence of defects The above suggested or mentioned details are based on our research. It may vary based on soil, climate and management practices.	११. काणीनंतरचे व्यवस्थापन आकार, आकार, रंग आणि दोष नसणे यांनुसार फळांची श्रेणी द्या। वरील सुचवलेले किंवा नमूद केलेले तपशील आमच्या संशोधनावर आधारित आहेत. ते माती, हवामान आणि व्यवस्थापन पद्धतीवर आधारित बदलू शकतात.	११. कांई के बाद का प्रबंधन आकार, आकार, रंग और दोषों की उपस्थिति के अनुसार वर्गीकृत करें। उपरोक्त सुझाए गए या उल्लिखित विवरणों पर हमारे शोध पर आधारित हैं। ये मिट्टी, जलवायु और प्रबंधन प्रथाओं पर आधारित हो सकते हैं।	११. कांई के बाद का प्रबंधन आकार, आकार, रंग और दोषों की उपस्थिति के अनुसार वर्गीकृत करें। उपरोक्त सुझाए गए या उल्लिखित विवरणों पर हमारे शोध पर आधारित हैं। ये मिट्टी, जलवायु और प्रबंधन प्रथाओं पर आधारित हो सकते हैं।	११. कांई के बाद का प्रबंधन आकार, आकार, रंग और दोषों की उपस्थिति के अनुसार वर्गीकृत करें। उपरोक्त सुझाए गए या उल्लिखित विवरणों पर हमारे शोध पर आधारित हैं। ये मिट्टी, जलवायु और प्रबंधन प्रथाओं पर आधारित हो सकते हैं।	११. कांई के बाद का प्रबंधन आकार, आकार, रंग और दोषों की उपस्थिति के अनुसार वर्गीकृत करें। उपरोक्त सुझाए गए या उल्लिखित विवरणों पर हमारे शोध पर आधारित हैं। ये मिट्टी, जलवायु और प्रबंधन प्रथाओं पर आधारित हो सकते हैं।	११. कांई के बाद का प्रबंधन आकार, आकार, रंग और दोषों की उपस्थिति के अनुसार वर्गीकृत करें। उपरोक्त सुझाए गए या उल्लिखित विवरणों पर हमारे शोध पर आधारित हैं। ये मिट्टी, जलवायु और प्रबंधन प्रथाओं पर आधारित हो सकते हैं।